विलायत

रहबरे मुअज़्ज़म आयतुल्लाहिल उज़मा सैय्यद अली खामेनाई

जो नया विचार और सूझ खुदा ने पैग़म्बर[स०] के द्वारा प्रस्तुत किया उसमें एक नये जीवन का वचन है जो एक संयुक्त समाज व समुदाय के मस्तिष्क में उसकी पहचान तथा उसके क्रिया कलापों को निरोपित करके प्राप्त किया जा सकता है।

ऐसे समाज जो ठोस तथा अभेद्य सीमा बनाये हुए हों, वहां विपरीत विचार तथा क्रिया कलापों को सरलता से पनपने की छूट नहीं मिल सकती। इसी वजह से यदि निर्भरता का विरोध सम्बन्ध हुआ तो साधारण सम्बन्धों का बन्धन महत्वहीन हो जाएगा। क़ुर्आन के शब्दों में अनुयायियों का विचार दर्शन तथा क्रिया कलाप के बिन्दु पर सेना की सजी सजाई टुकड़ी की तरह होना ''विलायत'' कहलाता है।

आगे जब मिली जुली इकाई जो इस्लामी सोसाइटी के किनारे का पत्थर हों और इस्लामी समाज का प्राथमिक सिद्वान्त, पहला उसूल है। वह एक शक्तिशाली तथा व्यवस्थित इस्लामी समाज बनाता है, आवश्यकता है कि हम विलायत के सिद्वान्त पर विचार करें, उसकी एकता तथा आपसी सद्भावना को नज़र में रखते हुए और दुश्मनों को उस समाज में घुसपैठ न मिल पाने का ख़्याल रखते हुए।

क़ुर्आन में इस विचार बिन्दु पर बहुत सी मिसालें है। उनमें से कुछ यह हैं..........

.......ऐ ईमान लाने बालों, तुम मेरे शत्रुओं को और अपने शत्रुओं को मित्र न बनाओ। तुम उनसे मुहब्बत से पेश आते हो, हालांकि जो हक़ (सत्य। तुम्हारे पास आ चुका है वह उसके क़तई मुन्किर (इन्कार करने वाले) हो चुके हैं। (वह पैग़म्बर[स०]) को और तुमको इसी बिना पर निकालते हैं कि तुम अल्लाह, अपने परवरदिगार पर ईमान रखते हो अगर तुम मेरी राह में जिहाद (धर्म युद्ध) करने के लिए और मेरी खुशनूदी (प्रसन्नता) प्राप्त करने के लिए अपने घरों से निकले हो, ऐसा न करो कि तुम उन्हें चुपके-चुपके दोस्ती के पैग़ाम देते रहो हालांकि जो कुछ तुम दिखाते हो या तुम जिसका इज़हार करते हो उसका मुझे ज्ञान है और जो तुममें से ऐसा करेगा वह राह-ए-रास्त से (सत्यमार्ग) से क़तई भटका हुआ है। अगर वह तुमको पकड़ पायें तो तुम्हारे शत्रु हो जायें और कष्ट पहुंचाने के लिए अपने हाथ बढ़ाएं और अपशब्द कहें और इच्छा यह करें कि काश तुम इन्कार करने वाले हो जाओ। न तुम्हारा परिवार व सम्बन्ध तुमको लाभ पहुंचाएगा न तुम्हारे बाल-बच्चे) क़यामत के दिन वह तुम्हारे बीच जुदाई करवा देगा, और जो कुछ भी अ़मल (कर्म) तुम करते हो अल्लाह उसका देखने वाला है। तुम्हारे लिए इब्राहीम तथा उन लोगों की बातें जो उनके साथ थे अच्छा नमूना (उदाहरण) मौजूद है जिस समय कि उन्होंने अपनी क़ौम से यह कहा कि हम तुमसे और उन चीज़ों से जिनकी तुम खुदा के अ़लावा परस्तिश (पूजा अर्चना) करते हो यक़ीनन बेजार है। हम तुमसे अलग हो चुके हैं तुम जब तक कि खुदा-ए-यकता (एकमात्र खुदा) पर ईमान लाओ।

इस्लामी समाज के आपसी रिश्ते

महान समाज की स्थापना के पश्चात वह मिली जुली इकाई जो इस्लाम के आदर्शलोक की उद्गम तथा संसार मे सच्ची पैरवी हैं ऐसे समाज में ''विलायत'' का सिद्वान्त उसके भीतरी अथवा शहरी और विदेशी मुआ़मलों व नीतियों तक फैला हुआ है।

शहरी (नागरिक) मुआ़मलों या नीतियों में राष्ट्र के सभी एकीकृत वर्ग की यकसां ज़िम्मेदारी के साथ सभी शक्तियां एक लक्ष्य के लिए सावधानी पूर्वक एक मार्ग पर कार्य करती हैं, और उसके अनुशासनहीन होने तथा बिखरने से सतर्कतापूर्वक बचती हैं जो उस शक्ति के किसी भाग के प्रभावहीन

हो जाने का कारण बनें।

विदेशी मुआमेलों या नीतियों में भी वह ऐसे ही सम्बन्ध बनाती है या दोस्ती क़ायम करती है जो स्वाधीनता के लिए घातक न हो और इस्लामी संसार में जगह रखता हो।

यह पूर्णतया स्पष्ट है कि ''विलायत'' के जिन–जिन तथ्यों पर ध्यान देना ज़रूरी है उनमें दो मूल तत्व हैं। शहरी (नागरिक) एकता तथा सद्भवना, अप्रभावित व स्वतन्त्र विदेश नीति (साथ ही साथ केंद्रीय तथा सर्वोच्च शक्ति) यह सच है कि केन्द्रीय तथा सर्वोच्च शक्ति व रचनात्मकता इस्लामी शासक में गडमड होती है, यकजाई होती है। यह भी आवश्यक होता है कि प्रत्येक मुसलमान अथवा मुस्लिम समाज का प्रत्येक व्यक्ति तथा उसके शासक (इमाम) के बीच एक गहरा तथा मज़बूत सम्बन्ध हो। यह ''विलायत''का दूसरा तत्व है कि उसकी विलायत नुमायां हो और वह इस्लामी संसार का नेतृत्व करे।

नीचे दिए गए क़ुर्आन के उदाधरण में उपरोक्त तत्व दिए हुए हैं।

..........ऐ ईमान लाने वालों, यहूद व नसारा (ईसाइयों) को दोस्त न बनाओ यह आपस में एक दूसरे के दोस्त हैं और जो तुममें से उनको दोस्त बनाएगा तो वह उन्हीं में से हो जाएगा। बेशक अल्लाह ज़ालिमों (अत्याचारियों) की रहनुमाई (मार्गदर्शन) नहीं फ़रमाता, फिर उन लोगों को जिनके दिलों में रोग है, तुम देखोगे कि उनकी दोस्ती, वे बहुत करते हैं और कहते हैं, कि हम डरते हैं कि हम किसी मुसीबत के फेर में न आ जायं। बस क़रीब है कि खुदा विजय या कोई और बात अपनी तरफ़ से ज़ाहिर करे और यह मुनाफ़िक़ (कपटाचारी) जो कुछ अपने दिलों में छिपाये हुए हों नादिम (लज्जित) हों। उस समय ईमान लाने वाले कहेंगे क्या यह उनके आमाल (कर्म) बेकार हो गये और वह नुक़सान उठाने वालों में हो गये।

...........ऐ ईमान वालों जो तुम में से अपने दीन से फिर जाएगा तो खुदा का नुक़सान नहीं खुदा अनक़रीब (जल्दी ही) ऐसे लोगों को लाएगा जिनको वह दोस्त रखता है और उसको वह दोस्त रखते हैं। मोमिनों के लिए वह रहमदिल (दयालु) है और इंकार करने वालों के लिए सख़्त हैं। खुदा की राह में जिहाद करते हैं, और किसी मलामत करने वाले (आलोचक) की मलामत (आलोचना) से नहीं डरते। यह खुदा का फ़ज़्ल (कृपा) है जिसको चाहे अ़ता फ़र्माए और खुदा–ए–तआ़ला वाक़िफ़कार (व्यापक ज्ञान का धनी) है हाकिम तुम्हारा अल्लाह है और उसका रसूल और वह लोग हैं जो ईमान लाए हैं। नमाज़ पढ़ते हैं और हालत–ए–रूकूअ़ में ज़कात देते हैं।

..........ऐ ईमान वालों अल्लाह से ऐसा डरो जैसा कि उससे डरने का हक़ है, और हरगिज़ न मरो लेकिन उस हालत में कि तुम इस्लाम पर हो अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से पकड़ लो और फूट न डालो''

विलायत का स्वर्ग

बस वही समाज विलायत से लाभ उठा सकता हैं जो ''वली'' को यक़ीन के साथ जान–पहचान लेता है। वह ऐसा व्यक्ति होता है जो ज़िन्दगी की सभी सरगर्मियों का हाकिम व प्रेरणादायक होता है और विलायत का फ़ाएदा उसी व्यक्ति को हो सकता है, जिसे ''वली'' की सही शिनाख़्त हो और जो ''वली'' से अपने को जोड़े रहने के लिए निरन्तर क्रियाशील व सरगर्म रहे। ऐसे ''वली'' से जो खुदा का प्रतिनिधि होने को दर्शा सके, जहां तक ''वली'' के खुदा के नायब होने का और खुदा की दी हुई शक्तियों को दर्शाने का सवाल है वह उन सभी सम्भावनाओं और प्रतिभाओं से काम लेता है जो इंसान के स्वभाव में अपना मूल्य और महिमा बढ़ाने के लिए और लाभ उठाने के लिए निहित हैं, साथ ही साथ यह भी वह अपने किसी ज्ञान या शक्ति का प्रयोग मानवता के विरूद्ध नहीं करेगा और न कोई क्षति पहुंचाने वाला कार्य ही करेगा वह न्याय व सुरक्षा की स्थापना समाज में करेगा जो उसी प्रकार मानव जीवन और समाज के लिए आवश्यक है जिस प्रकार उपजाऊ मिट्टी, पानी तथा अच्छी जलवायु पौधों के विकास के लिए आवश्यक होती है। वह सभी प्रकार की क्रूरता (अनेकेश्वरवाद, अपने अथवा अन्य के हित में अन्याय करने को) रोकेगा। ईश्वर के आदेशानुसार धर्म की अगुवायी उसके निर्देशों के अधीन करेगा। मानव के ज्ञान और दर्शन को विस्तृत और उसके लिए किए गए प्रयासों के शुभारम्भ नेतृत्व करेगा।

वह सिद्धान्तों का दायित्व महसूस करेगा। वह खुदा की उपासना प्रार्थना (नमाज़) स्थापित करेगा उसे खुदा का सान्निध्य प्राप्त होगा। ज़कात का

बटवारा न्यायपूर्वक समुचित ढंग से करेगा। अच्छे कामों (मारूफ़) को प्रोत्साहित करेगा और अनुचित कार्य (मुन्कर) को समाप्त करेगा। संक्षेप में वह मनुष्य को अपने वास्तविक लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायता देगा। यदि कुर्आन की निम्नलिखित आयत के विषय में विचार किया जाय तो वह हमें ''विलायत'' के स्वर्ग के क्षितिज की ओर इंगित करती है। यह अकाट्य सत्य है और ज़ोर देकर कहा जा सकता है कि धार्मिक नियंत्रण का और कोई क्षेत्र इतना प्रभावशाली व महत्वपूर्ण नहीं है जितनी कि ''विलायत''।

............बनी इसराईल में जो इन्कार करने वालों में थे। उन पर दाऊद के बेटे और मरियम के बेटे ईसा की ज़बान से लानत की गई, यह लानत उन पर पड़ी तो बस इस वजह से कि इन लोगों ने नाफ़रमानी की और फिर हर मुआमला में हद से बढ़ जाते थे और किसी बुरे काम को जिसको इन लोगों ने किया। बाज़ न आए थे। बल्कि नसीहत के बाद भी अड़े रहते थे, जो काम यह लोग करते थे क्या ही बुरा था। ऐ पैग़म्बर[स०]! तुम यहूदियों में बहुतेरों को देखोगे कि इन्कार करने वालों से दोस्ती रखते हैं। जो सामान पहले से इन लोगों ने खुद अपने लिए दुरूस्त किया है कितना बुरा है। जिसका नतीजा यह है कि दुनिया में भी खुदा इन पर ग़ज़बनाक और क्रोधित हुआ और परलोक में भी हमेशा प्रकोप में रहेंगे। अगर यह लोग खुदा व पैग़म्बर[स०] पर और जो कुछ उन पर अवतरित किया गया है, ईमान रखते हैं, तो हरगिज़ दोस्त न बनाते, मगर उनमें से बहुतेरे बदचलन हैं।

.............ऐ ईमानदारों! जिन लोगों को (यहूद व नसारा) तुमसे पहले किताब (तौरैत व बाइबिल) दी जा चुकी है इनमें से जिन लोगों ने तुम्हारे दीन को हंसी खेल बना रखा है उनको और इन्कार करने वाले को अपना सरपरस्त न बनाओ अगर तुम सच्चे ईमानदार हो तो, खुदा ही से डरते रहो और उनकी शरारत यहां तक पहुंची कि जब तुम अज़ान देकर नमाज़ के लिए लोगों को बुलाते हो तो, यह लोग नमाज़ को हंसी खेल बनाते हैं। यह इस वजह से कि लोग बिल्कुल बेअक़्ल हैं और कुछ नहीं समझते (ऐ रसूल) यह तो अहल–ए–किताब से कहो आख़िर तुम हममें सिवा इसके और क्या ऐब लगा सकते हो कि हम खुदा पर और जो किताब हमारे पास भेजी गयी है और जो हमसे पहले भेजी गयी है, पर ईमान लाए हैं और यह कि तुममें से अक्सर दुश्चरित्र हैं।

विलायत के विषय में (1)

विलायत के सिद्धान्त की कुर्आन में बड़े विस्तार के साथ चर्चा की गयी है। उस पर कई नज़रिये से विचार किया जा सकता है जो सभी समय–समय पर इस्लाम को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यदि कोई निम्नलिखित आयतों पर ध्यानपूर्वक विचार करेगा तो उसे इन नज़रियों में से कुछ का दर्शन हो सकता है।............

1. मुस्लिम समाज की ''वली'' वह शक्ति है जो उक्त समाज की मानसिक तथा रचनात्मक क्रियाओं में अगुवाई करती है। यह खुदा है या उसके द्वारा नाम लेकर या इशारे से नामज़द किया गया व्यक्ति।

..........ऐ ईमानदारों, तुम्हारे मालिक और सरपरस्त तो बस यही खुदा और रसूल और वह ईमान वाले ही हैं जो पाबन्दी से नमाज़ अदा करते हैं और ''रूकुअ'' की हालत में ज़कात देते हैं।

...........ऐ ईमानदारों, खुदा तुम्हें हुक्म देता है कि, लोगों की अमानतें, उनके हवाले कर दो और जब–जब लोगों के झगड़ों का फैसला करने लगो तो न्याय से फैसला करो। खुदा तुमको इसका क्या ही अच्छा निर्देश करता है, इसमें तो शंका नहीं कि खुदा सबकी सुनता है और सब कुछ देखता है। ऐ ईमानदारो! खुदा की इताअ़त (आज्ञापालन) करो और पैग़म्बर की तथा जो तुममें से आदेश देने के अधिकारी (ऊलिल अम्र) हैं उनकी आज्ञा मानों और किसी बात में झगड़ा न करो। बस अगर तुम खुदा और रोज़–ए–आख़िरत में ईमान रखते हो तो इस विषय में खुदा व रसूल की तरफ़ आ जाओ, वही तुम्हारे लिए उचित व फ़लदायक है, परिणाम बहुत अच्छा है।

..........जिसने रसूल की इताअत (आज्ञापालन) की उसने खुदा की इताअत की। यदि किसी ने इन्कार किया तो तुम कुछ ख़्याल न करो क्योंकि हमने तुमको पासबान मुक़र्रर करके तो भेजा नहीं है।

2. खुदा की विलायत और उसका ईमान वालों द्वारा माना जाना, स्वीकार करना, मुस्लिम संसार में ऐसी मानसिक बुनियाद है जो एक स्वाभाविक रूप में देखी जा सकती है।

...........क्या आपने उन लोगों पर नज़र नहीं की

जो यह ख़याली पुलाव पकाते हैं कि जो किताब आप पर उतारी गयी और जो आप से पहले उतारी गयी थी सब पर ईमान लाए हैं मगर चाहतें यह हैं कि सरकशो को अपना हाकिम बनाएं। हालांकि उन्हें हुक्म यह है कि उन (सरकशों) की बात न माने और शैतान तो चाहता ही है कि उन्हें बहका कर दूर ले जाए।

...........हालांकि यह नहीं समझते कि जो रात को और दिन को ज़मीन पर रहता सहता है। सब काम उसी का है और वही सब कुछ जानता है। ऐ रसूल! तुम कह दो कि खुदा को, जो सारे आसमान और ज़मीन का पैदा करन वाला है छोड़कर दूसरे को अपना संरक्षक न बनाएं। वही सबको रोज़ी देता है। और उसे कोई रोज़ी नहीं देता, ऐ रसूल, आप कह दें कि मुझे हुक्म दिया गया है कि सबसे पहले इस्लाम लाने वाला मैं हूं और यह भी कि, सावधान! जानबूझकर इन्कार करने वालों में न होना।

विलायत के विषय में (2)

खुदा की विलायत के या उसके प्रतिनिध के अतिरिक्त और कोई विलायत शैतान की होगी। शैतान की विलायत में मनुष्य की रचना व क्रियात्मक शक्तियों पर शैतान का क़ाबू होता है। अतः मनुष्य उस शक्ति को अपनी कामुकता तथा दुर्भावना की पूर्ति के रास्ते में लगाने लगता है जहां तक शैतान का सम्बन्ध है वह अपने लाभ के सिवा किसी वस्तु की आवश्यकता को नहीं समझता और चूंकि मनुष्य की आवश्यकताओं और उसकी प्राकृतिक सम्भावनाओं के बारे में उसे कोई ज्ञान नहीं होता इसलिए जब वह मानव समाज का नेतृत्व हाथ में ले लेता है तो वहीं से मनुष्य की बहुमूल्य शक्तियों का विनाश और उनकी क्षति का प्रारम्भ होता है जो समाज शैतान की विलायत के नियन्त्रण में होता है उसमें सूचना के न होने का परिणाम यह होता है कि लोग ज्ञान के प्रकाश और मानव समाज और ईश्वर के जीवनदायी नियमों से वंचित हो जाते हैं और वे अज्ञानता, तुच्छ भावनाओं, स्वार्थ और प्रतिकूलता के अन्धकार में सीमित होकर रह जाते हैं। पवित्र कुर्आन कहता हैः

.........और जब तुम कुर्आन पढ़ने लगो तो शैतान के भ्रमों से खुदा की पनाह मांग लिया करो। ....इसमें सन्देह नहीं कि जो लोग ईमानदार हैं और अपने–अपने परवरदिगार (पालनहार) पर भरोसा रखते हैं उन पर उसका प्रभाव नहीं पड़ता, उसका प्रभाव चलता है तो बस उन्हीं लोगों पर जो उसकी दोस्त बनाते हैं और जो लोग उसको खुदा का शरीक बनाते हैं।

..........और जो व्यक्ति सत् मार्ग के ज़ाहिर होने के बाद रसूल से सरकशी करें, और ईमान वालों के तरीक़े के सिवा किसी और राह पर चलें तो जिधर वह फिर गया है हम भी उधर ही फेर देंगे और आख़िर में उसे जहन्नम (नरक) में झोंक देंगे और वह तो बहुत ही बुरा ठिकाना है। खुदा बेशक इसको तो नहीं बख़्शता (क्षमा करता) कि उसको (खुदा को) किसी और का शरीक बनाया जाए। इसके सिवा जो गुनाह (पाप) हों वह जिसको चाहे बख़्श दे, मआ़ज़ल्लाह (ऐसा नहीं)। किसी को खुदा का शरीक बनाया वह जो बस भटक कर बहुत दूर जा पड़ा। वह पथ–भ्रष्ट, खुदा को छोड़कर बस औरतों की ही आराधना करते हैं यानी बुतों की जो उनके ख़्याल में औरतें हैं। वास्तव में सरकश शैतान की उपासना करते हैं। जिस पर खुदा ने लानत की है और जिसने प्रारम्भ में कहा था कि खुदा वन्दा! मैं तेरे बन्दों में से कुछ मुख्य लोगों को अपनी तरफ़ ज़रूर ले लुंगा और फिर उन्हें पथ–भ्रष्ट करूंगा। उन्हें बड़ी–बड़ी आशाएं दिलाउंगा। तथा यक़ीनन उन्हें सिखा दूंगा कि फिर वह बुतों के वास्ते जानवरों के कान की ज़रूर चीर फाड़ करेंगे अलबत्ता उनसे कह दुंगा कि वह मेरी शिक्षा के अनुरूप खुदा की बनाई हुई छवि को बदल डालेंगे। यह याद रहे कि जिसने खुदा को छोड़कर शैतान को अपना संरक्षक बनाया उसने प्रत्यक्ष रूप में सख़्त घाटा उठाया है। शैतान उनसे अच्छे–अच्छे बादे भी करता है बड़ी बड़ी आशाएं भी दिलाता है शैतान उनसे जो कुछ भी बातें करता है वह भी धोखा है।

...........खुदा उन लोगों का संरक्षक है जो ईमान ला चुके हैं। उन्हें गुमराही के अंधकार से निकाल के ज्ञान के प्रकाश में लाता है। परन्तु जिन लोगों ने इन्कार किया उनका संरक्षक शैतान है कि उनको ईमान के प्रकाश से निकाल कर इन्कार के अन्धकार में डाल देता है। यही लोग तो जहन्नमी (नारकीय) हैं और यही लोग उसमें हमेशा रहेंगे।

विलायत के सम्बन्ध में (हिजरत)

जो समाज आसुरी व शैतानी विलायत के अन्तर्गत होता है उसमें सच्चे अनुयायी (मोमिन) विभिन्न

प्रकाश से असुर या राक्षस की शक्तियों पर निर्भर हो जाते हैं और उनके अनदेखे जाल में फंस जाते हैं। उनकी स्वाधीनता छिन जाती है और वे अनजाने रूप में उस अन्त तक पहुंच जाते हैं जहां पहुंचना ऐसी व्यवस्था का भाग्य है। ऐसी व्यवस्था सच्चे अनुयायी (मोमिन) को इस्लाम के रास्ते में अपनी शक्ति का प्रयोग करने से रोकती है।

यह अनिवार्य वास्तविकता हिजरत के गोचर रास्ते की ओर संकेत करती है शैतान के बन्धनों से बचना और इस्लाम के स्वाधीन वातावरण तक पहुंचना जहां प्रत्येक वस्तु मनुष्य को ईश्वरीय उद्देश्य की पथ–प्रदर्शक है और जहां समाज की स्वाभावक व्यवस्था मनुष्य के उत्थान तथा मानसिक और भौतिक विकास की ओर ले जाती है जहां अच्छाई हर चीज़ पर छा जाती है और बुराई का कोई चिन्ह मात्र भी दिखाई नहीं देता अर्थात् इस्लामी समाज।

अतः विलायत सिद्धान्त के अनुसार हिजरत सच्चे अनुयायी के लिए आवयश्क कर्तव्य है, उसका काम यह है कि वह शैतानी वातावरण से इस्लामी समाज की ओर स्थानान्तरित हों और ईश्वरीय विलायत के वातावरण में प्रवेश कर जाएं।

कुर्आन में हिजरत से सम्बन्धित जो आयतें हैं उनके बारे में विचार करने से इस विषय के बहुत से बिन्दु प्रकट हो जाते हैं।

..........उन लोगों की इच्छा तो यह है कि जिस तरह उन्होंने इन्कार किया है, तुम भी इन्कार करने वाले हो जाओ, ताकि तुम उनके बराबर हो जाओ। बस जब तक कि तुम खुदा की राह में हिजरत न करो। तुम उनमें से किसी को दोस्त न बनाओ फिर अगर वह इससे भी मुंह मोड़ें तो उन्हें गिरफ़्तार करो और जहां पाओ उनको क़त्ल कर दो। उनमें से किसी को अपना दोस्त न बनाओ।

..........जिन लोगों ने ईमान स्वीकार किया और हिजरत की तथा अपने जान व माल से खुदा की राह में जिहाद किया और जिन लोगों ने हिजरत करने वालों को जगह दी तथा हर तरह उनकी सहायता की यही लोग एक–दूसरे के दोस्त व रक्षक हैं। जिन लोगों ने ईमान को स्वीकार किया और हिजरत नहीं की तो तुम लोगों को उनकी सरपरस्ती से सम्बन्ध नहीं। यहां तक कि वह हिजरत करें और हां यदि दीनी मुआमले में तुमसे सहायता के इच्छुक हों तो तुम पर उनकी सहायता करना आवश्यक है। लेकिन उन लोगों के मुक़ाबिल नहीं जिनमें और तुममे परस्पर सुल्ह का क़रार व पैमान है जो कुछ तुम करते हो खुदा सब कुछ देखता है। जिन लोगों ने इन्कार किया है वह भी आपस में एक दूसरे के संरक्षक हैं। अगर तुम इस तरह मदद न करोगे तो ज़मीन पर फ़साद पैदा हो जाएगा। जिन लोगों ने ईमान स्वीकार किया है और हिजरत तथा जिहाद किया जिन लोगों ने ऐसे समय में हिजरत करने वालों को जगह दी और उनकी देखभाल की, यही लोग सच्चे ईमानदार हैं और इन्हीं के लिए मुक्ति और मान–सम्मान की रोज़ी है।

.........अवश्य जिन लोगों की रूह फ़रिश्तों ने उस वक़्त क़ब्ज़ कि जब वह दारूलहर्ब में पड़े अपनी आत्मा पर अत्याचार कर रहे थे और देवदूत रूह निकालने के बाद आश्चर्य से कहते कि तुम किस हालत–ए–ग़फ़लत (भ्रम की स्थिति) में थे तो वह क्षमा मांगने के शब्दों में कहते हैं कि हम तो ज़मीन पर बेसहारा थे, तो फ़रिश्ते कहते हैं कि खुदा की ऐसी लंबी चौड़ी ज़मीन में गुन्जाइश न थी कि तुम हिजरत करके चले जाते। बस ऐसे लोगों का ठिकाना जहन्नम है और वह बुरा ठिकाना है। मगर जो पुरूष और स्त्रियां और बच्चे इस क़दर बेबस हैं कि न तो दारूलहर्ब से निकलने के लिए उपाय कर सकते हैं और न ही उनकी मुक्ति की राह दिखाई देती है तो आशा है कि अल्लाह ऐसे लोगों को क्षमा कर दे। खुदा तो बहुत बड़ा क्षमा करने वाला और मुक्ति देने वाला है। जो व्यक्ति खुदा की राह में हिजरत करेगा वह ज़मीन पर निष्कंट चैन से रहने–सहने के बहुत से विस्तृत स्थान पाएगा। जो व्यक्ति अपने घर से जिलावतन होएंगे। खुदा और उसके रसूल की तरफ़ निकल खड़ा हुआ फिर यदि उसे इच्छित लक्ष्य तक पहुंचने से पहले मौत आ जाए तो भी खुदा पर उसका पुण्य लाज़िम (अनिवार्य) हो गया जबकि खुदा तो बड़ा बख़्शने वाला और मेहरबान है ही।

(आक़ा अली रिज़ा अनोशेरवानी के अंग्रेज़ी अनुवाद "The General Pattern of Islamic Thought in th Qur'an" से भाई याकूब हैदर ज़ैदी द्वारा अनुदित)

II II II